PHILOSOPHY

Hons., I Part (Paper I)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449957

चार्वाक द्वारा अनुमान प्रमाण का खंडन

→ चार्वाक अनुमान को संदेहात्मक मानता है। अनुमान के अन्तर्गत दृष्ट हेतु से अदृष्ट साध्य की सिद्धि होती है। जैसे- पर्वत पर दृष्ट धूम के ज्ञान से पर्वत पर अदृष्ट अग्नि का ज्ञान होना ~~अग्नि का अनुमान है~~ अनुमान (अग्नि का) है।

अनुमान के लिये दो बातें आवश्यक हैं। पहला हेतु का पक्ष में होना और दूसरा हेतु और साध्य में व्याप्ति-संबंध होना (यहाँ पक्ष का तात्पर्य पर्वत है)।

व्याप्ति ज्ञान अनुमान का प्राण है क्योंकि अनुमान तर्कतः इसी पर निर्भर है। व्याप्ति हेतु एवं साध्य के मध्य का अनौपाधिक, नियत साहचर्य (unconditional invariable concomitance), सार्वभौम तथा सत्चारी अव्यभिचारी संबंध है; जैसे - जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ अग्नि अवश्य है।

→ चार्वाक अनुमान का आधार व्याप्ति संबंध का खंडन करते हुये अनुमान का खंडन करता है। उसका तर्क है -

(i) व्याप्ति संबंध की स्थापना प्रत्यक्ष से संभव नहीं है। हम धुएँ से युक्त पर्वत को देखकर वहाँ अग्नि की निश्चयात्मक रूप से स्थापना तभी कर सकते हैं जब सर्वत्र सदैव धुएँ के साथ अग्नि विद्यमान हो। परन्तु भूत और भविष्य की बात तो दूर, वर्तमान काल में भी संसार के भिन्न-भिन्न भागों में धूम और अग्नि के सभी संबंधों का प्रत्यक्ष नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में धूम (हेतु) और अग्नि (साध्य) के कुछ संबंधों को देखकर उनके मध्य सार्वभौम संबंध ~~होने का निष्कर्ष~~ (व्याप्ति) की निश्चयात्मक रूप से स्थापना नहीं की जा सकती और यदि ऐसा किया जाता है ~~तब~~ तो फिर वहाँ ~~साम~~ सामान्यीकरण का दोष (fallacy of illicit generalization) उत्पन्न हो जाता है।

(ii) व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से भी संभव नहीं है क्योंकि तब फिर चक्रक दोष और अनवस्था दोष उत्पन्न होगा।

अनुमान व्याप्ति पर आधारित है, अब यदि व्याप्ति की सिद्धि अनुमान के आधार पर की जाय तो फिर वहाँ चक्रक दोष उत्पन्न होगा। पुनः यदि व्याप्ति की सिद्धि के लिये दूसरे अनुमान का सहारा लेना पड़े तो फिर दूसरे की व्याप्ति को सिद्ध करने ~~सिद्ध~~ के लिये तीसरे अनुमान की आवश्यकता आ जायेगी और इस प्रकार अनवस्था दोष उत्पन्न होगा।

→ व्याप्ति की स्थापना शब्द प्रमाण से भी संभव नहीं है क्योंकि स्वयं शब्द की प्रामाणिकता अनुमान पर आधारित होती है। ऐसी स्थिति में आत्माश्रय दोष की स्थिति उत्पन्न होगी।

→ व्याप्ति को सामान्यगत भी नहीं माना जा सकता क्योंकि प्रत्यक्ष सदैव वस्तुविशेषों का होता है, सामान्य का नहीं। हमें कभी भी धूमत्व या अग्नित्व के सामान्य संबंध का प्रत्यक्ष नहीं होता। चार्वाक के मतानुसार व्याप्ति को सामान्यगत मानने पर आत्माश्रय दोष की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में अनुमान का स्वरूप होगा-

जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है।

इस पर्वत पर धुआँ है।

अतः इस पर्वत पर आग है।

उपरोक्त अनुमान में निष्कर्ष आधार वाक्यों में ही ~~सिद्ध~~ सिद्ध हो चुका है, अतः सिद्ध का पुनः साधन करना व्यर्थ है। यही सिद्धि-साधन दोष है।

→ व्याप्ति की स्थापना कार्य-कारण संबंध के आधार पर भी संभव नहीं है क्योंकि कार्य-कारण संबंध स्वयं एक प्रकार की व्याप्ति है, क्योंकि यह भी कारण-कार्य के मध्य अनिवार्य और सामान्य संबंध की बात करता है। अतः यदि कारणता सिद्धान्त पर व्याप्ति को सिद्ध करने का प्रयास किया गया तो फिर चक्रक दोष (fallacy of Arguing in a Circle) उत्पन्न हो जायेगा।

→ इस प्रकार चार्वाक अनुमान का आधार व्याप्ति संबंध का खंडन करते हुये अनुमान प्रमाण का खंडन करता है।